प्राथमिक विद्यालयों के संदर्भ में महात्मा गांधी के विचारों का अन्वेषण

पंकज दास*

महात्मा गांधी जी का मानना था कि शिक्षा ही व्यक्तियों में सर्वश्रेष्ठता ला सकती है। उनके आदर्श, विश्वास और मूल्य दुनिया-भर के लोगों के लिए पथ प्रदर्शक बन गए। हालाँकि, समकालीन संदर्भ में महात्मा गांधी की शिक्षा की प्रासंगिकता को समझने के लिए, उनको स्कूल के पाठों में शामिल करना आवश्यक है। इस आलेख में इसी बिंदु को ध्यान में रखकर चर्चा की गई है। यह अध्ययन दो अलग-अलग स्कूल पाठ्यक्रमों— गुजरात राज्य बोर्ड और केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) में उपयोग की जाने वाली प्राथमिक पाठ्यपुस्तकों में महात्मा गांधी के चित्रण का विश्लेषण करता है इसके अलावा, इस अध्ययन में महात्मा गांधी के प्रति शिक्षकों की धारणाओं का विश्लेषण किया गया। इसमें लेखक द्वारा वर्तमान समय में महात्मा गांधी से संबंधित विषय पर पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करना और यह जाँचना है कि शिक्षक महात्मा गांधी को कितना समझते हैं और वर्तमान पीढ़ी के लिए वह कितने प्रासंगिक हैं। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में महात्मा गांधी का प्रक्षेपण बच्चे के समग्र नैतिक, आध्यात्मिक और चारित्रिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दोनों बोर्डों के प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक महात्मा गांधी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं और उनके नेतृत्व गुणों की सराहना करते हैं। शिक्षक, प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में महात्मा गांधी से संबंधित विषयों को पढ़ाने के लिए आगमनात्मक शिक्षण पद्धति को सबसे प्रभावी तंत्र मानते हैं। इस प्रकार अध्ययन के परिणाम कुछ गांधीवादी मूल्यों और आज उनकी प्रासंगिकता पर भी प्रकाश डालते हैं।

शिक्षक कौशल, विश्वास, नैतिक आदतें और ज्ञान के अर्जन को बढ़ाती है। इसे विद्यार्थियों को इस तरह प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे उनमें जीवन के प्रति आत्मविश्वास विकसित हो। शिक्षा रटने की पद्धति पर आधारित नहीं होनी चाहिए, बल्कि व्यक्तिगत और प्रसिद्ध हस्तियों से जुड़ी वास्तविक जीवन की घटनाओं से प्रेरित होनी चाहिए। इस संबंध में, महात्मा गांधी आधुनिक युवाओं के लिए एक अत्यधिक प्रासंगिक व्यक्तित्व हैं। उनके सिद्धांत युवाओं को प्रेम, शांति, सत्य और अहिंसा से प्रेरित कर सकते हैं

*असिस्टेंट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ एजुकेशन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211 002

(मिलान, 2020)। इतिहास महात्मा गांधी की शिक्षाओं और दर्शन के गतिशील प्रभाव को पहचानता है। राष्ट्र-निर्माण का उनका विचार बुनियादी शिक्षा की अवधारणा पर आधारित था, जिसका उद्देश्य स्वदेशी शिक्षा प्रणाली को मजबूत करना था। उन्होंने श्रम की गरिमा और नवीन शिल्प-केंद्रित शिक्षा पर बल दिया। उन्होंने समाज के ग्रामीण और हाशिए पर मौजूद वर्गों के लिए सर्वोदय को बढ़ावा देने, महिला सशक्तीकरण और सांप्रदायिक सद्भाव पर भी बल दिया, जो शिक्षा के माध्यम से ही हासिल किया जा सकता है।

आज की दुनिया में महात्मा गांधी की शिक्षा की प्रासंगिकता को समझने के लिए, गांधीवादी दर्शन पर आधारित कुछ सामग्री या गांधीवादी मूल्यों को प्रदान करने वाले पाठ्यक्रम को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करना अनिवार्य है। गांधी जी सत्य, अहिंसा, करुणा और सहिष्णुता जैसे मानवीय मूल्यों में विश्वास करते थे, जिसका वे अपने शब्दों और कार्यों में अभ्यास करते थे। उनके आदर्श, विश्वास और मूल्य दुनिया-भर के लोगों के लिए आशा की किरण बन गए। महात्मा गांधी के लिए सच्चाई अत्यंत महत्वपूर्ण थी और उन्होंने इसका प्रचार और अभ्यास किया। उनका यह भी मानना था कि कहानी सुनाकर छोटे बच्चों में सच्चाई पैदा की जा सकती है। उन्होंने राजा हरिश्चंद्र की कहानी का उदाहरण साझा किया, जिसने उन पर गहरा प्रभाव डाला और उन्हें दिन-रात खुद से सवाल करने पर विवश कर दिया। "हम सभी को हरिश्चंद्र की तरह सच्चा क्यों नहीं होना चाहिए?" (*सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी*, अध्याय 2)। महात्मा गांधी के अनुसार सत्य की मानसिक समझ होना ही पर्याप्त नहीं है। सत्य को हमारे विचारों, वाणी और कार्यों के माध्यम से कार्यान्वित किया जाना चाहिए। प्रधान (2016) बताते हैं कि महात्मा गांधी के लिए सोचना, बोलना और सत्य पर कार्य करना एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और इन्हें एकीकृत किया जाना चाहिए। इसका मतलब है कि हमारे विचार, शब्द और कार्य सत्य के अनुरूप होने चाहिए।

स्कूलों को अपने मूल पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में, सच्चाई के अलावा, हमारे देश के इतिहास और इसके महान स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में आलोचनात्मक चेतना को शामिल करना चाहिए। इसे 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उल्लेखित किया गया है। बच्चे अपने राष्ट्रीय नायकों द्वारा किए गए संघर्षों और बलिदानों के बारे में सीखकर अपने देश के अतीत को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।

बच्चों को आख्यानों से जुड़ने में आनंद आता है, विशेषकर उन आख्यानों से जिनमें महान चरित्र होते हैं। हालाँकि, इस बात पर बल देना आवश्यक है कि ऐसी कहानियों का उपयोग नायक पूजा को बढ़ावा देने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। इसके बजाय, ऐतिहासिक व्यक्तित्वों की कहानियों को सामान्य लोगों की कहानियों के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जो चिंताओं, विफलताओं, आशाओं और विद्रोह से भरी हों।

उदाहरण के लिए, महात्मा गांधी के असहयोग, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलनों के नेतृत्व को केवल ऐतिहासिक घटनाओं के पाठ के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए। इसके बजाय, यह उजागर करना महत्वपूर्ण है कि महात्मा

गांधी अपनी खामियों, गलतियों, आशाओं और आकांक्षाओं के साथ एक सामान्य व्यक्ति थे। यह एक महान ऐतिहासिक कहानी को एक नया और अधिक आकर्षक अर्थ देने में सहायता कर सकता है। (पाठक, 2009)

इतिहास की किताबों में तथ्यात्मक विवरणों के बारे में बहुत सारी जानकारी है, लेकिन कहानियों, कविताओं या मूल्यवर्धित पाठ्यक्रमों जैसे ग्रंथों में महात्मा गांधी जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों पर विचार करना महत्वपूर्ण है। ऐसा करना नैतिक होगा और व्यक्तियों के समग्र आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देगा (अहमद, 2021)। शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी शिक्षण पद्धतियाँ विद्यार्थियों के दिमाग में मूल्य जोड़ें और उन्हें गांधी तथा उनके अहिंसा और सत्याग्रह जैसे आंदोलनों को समझने में मदद करें।

यह अध्ययन इस बात की जाँच करता है कि दो बोर्डों पर शिक्षक महात्मा गांधी से संबंधित विषयों को कैसे पढ़ाते हैं और प्राथमिक स्तर पर उनसे निपटने के लिए वे किस तंत्र का उपयोग करते हैं। हमारी प्राथमिक पाठ्यपुस्तकों में उनके प्रक्षेपण की जाँच करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन इस बात का पता लगाता है कि महात्मा गांधी से संबंधित विषय विभिन्न पाठ्यक्रमों में कितने प्रतिबिंबित होते हैं और प्राथमिक स्तर पर महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित कौन-सी सामग्री शामिल की जाती है।

इसके अलावा, इस अध्ययन में महात्मा गांधी के बारे में शिक्षकों की धारणाओं का विश्लेषण किया गया। प्राथमिक फोकस महात्मा गांधी से संबंधित विषय से संबंधित पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करना और यह जाँचना है कि शिक्षक महात्मा गांधी को कितना समझते हैं और वह वर्तमान पीढ़ी के लिए कितने प्रासंगिक हैं। इसलिए अध्ययन में इन उद्देश्यों को ध्यान में रखा गया था।

अध्ययन का उद्देश्य

- दो शिक्षा बोर्डों की प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में परिलक्षित महात्मा गांधी के विचारों का विश्लेषण करना।
- प्राथमिक स्तर पर महात्मा गांधी के प्रति शिक्षकों की धारणाओं का विश्लेषण करना।

शोध अभिकल्प तथा विधि

यह शोध अभिकल्प प्रकृति में विवरणात्मक-विश्लेषणात्मक है। अध्ययन का उद्देश्य पाठ्यपुस्तक सामग्री विश्लेषण और साक्षात्कार तकनीकों के माध्यम से अपने उद्देश्यों को प्राप्त करना था। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों का उपयोग किया गया। प्राथमिक स्रोत सी.बी.एस.ई. और गुजरात राज्य बोर्ड स्कूलों के प्राथमिक ग्रेड के शिक्षकों के साथ ऑनलाइन साक्षात्कार से प्राप्त किए गए थे। इन्हें द्वितीयक स्रोतों द्वारा पूरक किया गया, जैसे कि गुजरात राज्य बोर्ड और सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम में उल्लिखित महात्मा गांधी के बारे में कहानियाँ। अध्ययन नमूने में गुजरात राज्य बोर्डों और सी.बी.एस.ई. स्कूलों के दस प्राथमिक अनुभाग के शिक्षक शामिल थे। उत्तरदाताओं की राय एकत्रित करने के लिए एक संक्षिप्त साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया। साक्षात्कार में शामिल प्राथमिक कक्षा के शिक्षकों की आत्म-पहचान की रक्षा के लिए छद्नाम का उपयोग किया गया। अध्ययन का उद्देश्य चयनित

शिक्षकों के दृष्टिकोण, शिक्षण रणनीतियों, अनुमानों और समझ में अंतर्दृष्टि, प्राप्त करना था।

स्कूली पाठ्यपुस्तकों में महात्मा गांधी का चित्रण

सी.बी.एस.ई. बोर्ड और गुजरात राज्य बोर्ड दोनों के स्कूलों में प्राथमिक पाठ्यपुस्तकों के पाठ्यक्रम पर महात्मा गांधी का प्रभाव गहरा और बहुआयामी है। अहिंसा, सत्य और सादगी के उनके सिद्धांतों पर बल देते हुए, ये पाठ्यपुस्तकें महात्मा गांधी को भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महान व्यक्तित्व और नैतिक और सामाजिक अखंडता के प्रतीक के रूप में चित्रित करती हैं। बच्चे उनके जीवन के बारे में सीखते हैं, पोरबंदर में उनके प्रारंभिक वर्षों से लेकर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनके नेतृत्व तक, सरलीकृत कथाओं और चित्रों के माध्यम से जो उनके विचारों को युवा दिमागों तक पहुँचाते हैं। आत्मनिर्भरता, साँप्रदायिक सद्भाव और हाशिए पर पड़े लोगों के उत्थान पर महात्मा गांधी की शिक्षाएँ इतिहास, नागरिकशास्त्र और नैतिक शिक्षा के पाठों में बुनी गई हैं, जो भावी पीढ़ियों के नैतिक दिशानिर्देश को आकार देती हैं। उनकी विरासत विद्यार्थियों के लिए सहानुभूति, सहिष्णुता और मानवता की सेवा के मूल्यों को विकसित करने के लिए एक ऐतिहासिक सबक और मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में कार्य करती है।

(क) सी.बी.एस.ई. पाठ्यपुस्तकों में महात्मा *गांधी*— **पाठ 09— 'स्वतंत्रता की ओर'** (चतुर्थ श्रेणी की हिंदी पाठ्यपुस्तक, *रिमझिम*)

इस पाठ का मुख्य विषय महात्मा गांधी से जुड़ी एक घटना है, जो हमारे देश की आजादी से पहले 1930 में घटी थी। जैसा कि सभी जानते हैं, उस दौरान ब्रिटिश सरकार हमारे देश पर शासन कर रही थी, और हमें स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग करने या अपनी इच्छानुसार कार्य करने की अनुमति नहीं थी। महात्मा गांधी और उनके जैसे कई अन्य स्वतंत्रता सेनानी हमारे देश की आजादी के लिए नागरिक युद्धों में शामिल हुए।

कहानी धानी नाम के एक नौ वर्षीय लड़के के बारे में है, जो अहमदाबाद के पास महात्मा गांधी के साबरमती आश्रम में अपने माता-पिता के साथ रहता था। आश्रम एक ऐसा स्थान था जहाँ पूरे भारत से लोग रहने और भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ने आते थे। हर किसी को कुछ काम करना पड़ता था, जैसे—खाना बनाना, बर्तन धोना, गायों और बकरियों का दूध निकालना आदि। रिच नाम का एक छोटा सा आश्रमवासी बिन्नी नाम की बकरी की देखभाल करता था। एक दिन जब धानी बिन्नी को खाना खिला रही थी तो हर कोई महात्मा गांधी के कमरे में योजना बना रहा था। धानी ने दावा किया कि वह सब कुछ समझता है, लेकिन सभी उसे बच्चा समझते हैं।

धानी की माँ ने उसे बताया कि वे सभी यात्रा पर जा रहे हैं। जब रिच ने पूछा कि वे कहाँ जा रहे हैं, तो धानी की माँ ने उसे भगा दिया। रिच बिंदा चाचा के पास गए और पूछा कि महात्मा गांधी नमक का विरोध क्यों कर रहे हैं। बिंदा चाचा ने बताया कि सभी भारतीयों को नमक पर कर देना पड़ता था और ब्रिटिश सरकार ने उन्हें स्वयं इसे बनाने से रोक दिया था। महात्मा गांधी ने ब्रिटिश सरकार से कर हटाने को कहा, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया। इसलिए उन्होंने दांडी जाकर नियमों के विरुद्ध समुद्री जल से नमक बनाने का निर्णय लिया।

धानी ने दांडी जाने का फैसला किया, लेकिन उसके पिता ने उसे बहुत समझाने की कोशिश की। उनके पिता ने उनसे कहा कि केवल वे लोग ही जाएंगे जिन्हें महात्मा गांधी ने चुना है। रिच ने महात्मा गांधी से पूछा कि क्या वह उनके साथ जा सकते हैं। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि धानी के पिता जैसा युवा व्यक्ति ही उनके साथ दांडी की दूरी तय कर सकता है। रिच ने समझा कि जब महात्मा गांधी दूर थे तो उन्हें बिन्नी की देखभाल के लिए वहीं रुकने की आवश्यकता थी।

अध्याय 'स्वतंत्रता की ओर' बताता है कि कैसे महात्मा गांधी और एक छोटे बच्चे के बीच वास्तविक जीवन की मुठभेड़ विद्यार्थियों को अपने बड़ों का सम्मान करके सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित कर सकती है।

(ख) गुजरात के राज्य बोर्ड की पाठ्यपुस्तकों में महात्मा गांधी

इकाई 08— 'द ग्रेट हीरो' (चौथी कक्षा की अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तक)

यह इकाई पूरी तरह से महात्मा गांधी पर केंद्रित है और चौथी कक्षा के बच्चों को उनके व्यक्तित्व के बारे में जानने के लिए डिजाइन की गई है। इकाई में विभिन्न गतिविधियाँ शामिल हैं, जैसे गतिविधि 01 में भारत की उन महान हस्तियों को पहचानना, जिन्होंने अपने देश की स्वतंत्रता, गौरव और महिमा के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया। गतिविधि 02 में, बच्चों को यह समझने में मदद करने के लिए महात्मा गांधी की कहानी का उल्लेख किया गया है कि किन बातों ने महात्मा गांधी को एक महान व्यक्तित्व (महात्मा) बनाया। इसके अतिरिक्त, इस इकाई में विद्यार्थियों को हमारे राष्ट्रपिता के बारे में अधिक जानकारी देने के लिए उनके कई प्रश्न और जीवन कहानियाँ शामिल हैं।

गतिविधि 1— इस गतिविधि में, विद्यार्थियों को भारत के महान नायकों को पहचानने और शिक्षक के साथ उल्लिखित महान व्यक्तियों के बारे में जानकारी साझा करने के लिए कहा जाता है।

गतिविधि 2 (कहानी)— *'मोहन ने नकल नहीं की'* यह कहानी बताती है कि किन बातों ने महात्मा गांधी को 'महात्मा' बनाया। उनमें कई गुण थे, जो उन्हें राष्ट्रपिता और एक महान व्यक्तित्व बनाते थे। उदाहरण के लिए, उन्हें सत्य से बहुत प्रेम था और वे सदैव उसका अभ्यास करते थे। छोटी उम्र से ही उन्होंने कई सवालों पर विचार किया, जैसे, "क्या मेरा कार्य सही है या गलत? क्या यह अच्छा है या बुरा?"

कहानी महात्मा गांधी के वास्तविक जीवन की एक घटना का वर्णन करती है। हालाँकि वह अपनी कक्षा में लगातार प्रथम स्थान पर नहीं आते थे, फिर भी वह हमेशा सभी के प्रति ईमानदार रहते थे। एक दिन वार्षिक निरीक्षण के दौरान, जब निरीक्षक (इंस्पेक्टर) निरीक्षण के लिए कक्षा पाँच में गया, तो अंग्रेजी कक्षा चल रही थी। निरीक्षक ने वर्तनी परीक्षण के लिए दस शब्द निर्धारित किए और मोहन (महात्मा गांधी) ने 'केटल' की गलत वर्तनी लिखी। जब उसके शिक्षक ने उसकी स्लेट पर त्रुटि देखी, तो उन्होंने महात्मा गांधी को पड़ोसी से शब्द की नकल करने का इशारा किया। महात्मा गांधी ने अपने शिक्षक की बात पर ध्यान दिया, लेकिन शब्द की नकल नहीं की। अत: जब इंस्पेक्टर कक्षा से बाहर चला गया तो अध्यापक ने उनको को डाँटते हुए

कहा, "मैंने तुम्हें इशारा किया था, लेकिन तुम समझे ही नहीं।" कक्षा उस पर हँसी, लेकिन उसे अपने कृत्य के लिए दोषी या खेद महसूस नहीं हुआ। महात्मा गांधी इतने ईमानदार थे कि उन्होंने कभी धोखाधड़ी नहीं की और इसी अनुकरणीय व्यवहार ने उन्हें महात्मा बना दिया।

महात्मा गांधी से जुड़ी यह घटना दो महत्वपूर्ण संदेश देती है। सबसे पहले, नैतिक चरित्र के साथ सत्य के मार्ग पर चलना एक सफल जीवन जीने के लिए महत्वपूर्ण है। सफलता प्राप्त करने के लिए अनुचित साधनों का उपयोग करना या गलत रास्ता अपनाना कभी भी उचित नहीं है, क्योंकि इससे आप समाज की नजरों में प्रशंसनीय व्यक्ति नहीं बन पाएँगे। दूसरे, हमारे कर्म ही यह निर्धारित करते हैं कि हम जीवन में सफल हैं या नहीं। महात्मा गांधी के नेक कार्यों ने उन्हें दूसरों की नजरों में एक महान व्यक्ति बना दिया।

गतिविधि 3— 'मोहन ने नकल नहीं की' कहानी पर प्रश्न (गतिविधि 2)

गतिविधि 4— महात्मा गांधी के व्यक्तित्व लक्षण

इस खंड में शिक्षक चाहते हैं कि प्रतिभागी उन विभिन्न व्यक्तित्व लक्षणों के बारे में सोचें और लिखें, जिन्हें वे महात्मा गांधी से जोड़ते हैं। शिक्षकों को ऐसा करते समय प्रतिभागियों को अपने कार्यों, भाषणों और लेखों पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। एक बार जब सभी ने अपने विचार सूचीबद्ध कर लिए तो शिक्षक ब्लैकबोर्ड पर विशेषताओं को संकलित कर सकता है। प्रतिभागियों को प्रत्येक विशेषता को दर्शाने वाले उदाहरण या उपाख्यान प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

गतिविधि 5— बच्चे गतिविधि 2 और 4 से महात्मा गांधी से संबंधित शब्दों की पहचान कर सकते हैं।

गतिविधि 6— महात्मा *गांधी और वल्लभभाई पटेल के बीच वास्तविक जीवन की बातचीत*

एक दिन जब महात्मा गांधी और वल्लभभाई पटेल जेल में बात कर रहे थे, तो महात्मा गांधी ने टिप्पणी की, "कभी-कभी, एक मरा हुआ साँप भी काम आ सकता है।" और उन्होंने अपनी बात स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित कहानी सुनाई—

"एक बार, एक साँप एक बूढ़ी औरत के घर में घुस गया। बुजुर्ग महिला डर गई और मदद के लिए चिल्लाने लगी। उसकी आवाज सुनकर पड़ोसी दौड़े और उस साँप को मार डाला। फिर, वे अपने घर लौट आए। मरे हुए साँप को दूर फेंकने की बजाय, वृद्ध महिला ने उसे अपनी छत पर फेंक दिया। कुछ समय बाद, ऊपर उड़ रही एक चील ने मरे हुए साँप को देखा। चील की चोंच में एक मोती का हार था, जिसे उसने कहीं से उठाया था। उसने हार को गिरा दिया और मरे हुए साँप को लेकर उड़ गई। जब वृद्ध महिला ने अपनी छत पर एक चमकदार वस्तु देखी, तो उसने उसे एक डंडे से नीचे खींच लिया। यह पाया कि यह एक मोती का हार था, वह खुशी से नाचने लगी!"

यह कहानी दर्शाती है कि प्रत्येक वस्तु का एक उद्देश्य होता है और प्रत्येक क्रिया विशिष्ट और अन्य कारणों से सहायक होती है।

जब महात्मा गांधी ने अपनी कहानी समाप्त की, तो वल्लभभाई पटेल ने कहा कि उनके पास भी बताने के लिए एक कहानी है—

"एक दिन, एक व्यक्ति को अपने घर में एक साँप मिला। वह इसे मारना नहीं चाहता था, क्योंकि उसे

जीवित प्राणियों को नुकसान पहुँचाना पसंद नहीं था, लेकिन उसे इसे हटाने में मदद करने वाला भी कोई नहीं मिला। इसलिए, उसने साँप को बर्तन से ढककर वहीं छोड़ने का फैसला किया। उस रात कुछ चोर व्यक्ति के घर में घुस गए और रसोई में चले गए। उन्होंने बर्तन देखा और सोचा कि इसके नीचे कुछ छिपा है। जैसे ही उन्होंने बर्तन उठाया, साँप ने उन्हें काट लिया। दुर्भाग्य से साँप के जहरीले डंक से चोरों की मौत हो गई। दूसरी ओर व्यक्ति का घर लुटने से बच गया।"

यह कथा कठिन परिस्थितियों में समझ से काम लेने पर बल देते हुए अहिंसा के गुण को भी बढ़ावा देती है।

गतिविधि 7— महात्मा गांधी और वल्लभभाई पटेल के बीच बातचीत पर आधारित प्रश्न (गतिविधि 6)।

गतिविधि 8— कहानी

एक बार, एक छोटा लड़का महात्मा गांधी से मिलने गया और यह देखकर व्यथित हो गया कि उन्होंने कैसे कपड़े पहने थे। उन्हें आश्चर्य हुआ कि इतनी प्रतिष्ठित हस्ती ने कपड़े क्यों नहीं पहने। इसलिए, उन्होंने महात्मा गांधी से पूछा कि उन्होंने कुर्ता क्यों नहीं पहना। उन्होंने धीरे से छोटे लड़के से कहा कि वह गरीब हैं और कुर्ता खरीदने में सक्षम नहीं हैं। छोटे लड़के का दिल दुख रहा था, इसलिए उसने महात्मा गांधी से कहा कि उसकी माँ अच्छी सिलाई करती है और वह उससे उनके लिए कुर्ता सिलने के लिए कह सकता है। महात्मा गांधी ने लड़के से पूछा कि उसकी माँ कितने कुर्ते बनाती है, तो लड़के ने धीरे से उत्तर दिया कि उसकी माँ जितने चाहे उतने बना सकती है।

गतिविधि 8 का उद्देश्य दूसरों की भावनाओं को समझने और उन पर प्रतिक्रिया देने के महत्व पर प्रकाश डालने वाली एक कहानी साझा करके विद्यार्थियों के बीच सहानुभूति पैदा करना है।

महात्मा गांधी के प्रति शिक्षकों की धारणाओं का विश्लेषण

(i) सी.बी.एस.ई. शिक्षकों की धारणा

सी.बी.एस.ई. से संबद्ध स्कूलों में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का महात्मा गांधी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है। वे अपने विद्यार्थियों को कक्षा में व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से अध्याय या कविताएँ पढ़ने की अनुमति देते हैं और फिर अध्याय के उद्देश्य, सामग्री और विभिन्न प्रश्नों और उत्तरों पर चर्चा करते हैं। कुछ शिक्षक आगमनात्मक शिक्षण पद्धति का पालन करते हैं, जिसमें वे अपने विद्यार्थियों को अध्याय या कविता की एक झलक देने के लिए सबसे पहले महात्मा गांधी या अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के व्यक्तित्व पर चर्चा करते हैं। उन्हें महात्मा गांधी का विषय बहुत प्रासंगिक लगता है, विशेषकर चौथी कक्षा का विषय 'स्वतंत्रता की ओर'। शिक्षकों के अनुसार, महात्मा गांधी और एक छोटे बच्चे के बीच वास्तविक जीवन की घटना विद्यार्थियों को अपने बड़ों की बातों का सम्मान करके सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित कर सकती है। कहानी का स्तर चौथी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी उपयुक्त है, जो गहराई से सोच सकते हैं और महात्मा गांधी के संबंध में बुनियादी ज्ञान और विचार रखते हैं। कुछ शिक्षकों ने सुझाव दिया है कि प्राथमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम में गांधीवादी शांति, प्रेम, विश्वास और अहिंसा सिद्धांतों पर अतिरिक्त विषय शामिल हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि प्राथमिक स्तर पर बच्चे महत्वपूर्ण विकासात्मक चरण में होते हैं। महात्मा गांधी के व्यक्तित्व को विस्तार

से समझने से उनके लिए माध्यमिक स्तर पर उनका अध्ययन करना आसान हो जाएगा।

(ii) गुजरात राज्य बोर्ड शिक्षकों की धारणा

साक्षात्कार में शामिल प्राथमिक कक्षा के शिक्षकों को महात्मा गांधी के नेतृत्व गुणों से प्रेरणा मिलती है। वे उनको एक महान नेता के रूप में देखते थे जो हमेशा खुद पर विश्वास करते थे। वह क्षमाशील थे और उनका अहिंसक दृष्टिकोण सदैव उचित समझा जाता था। वह महान चरित्र के व्यक्ति थे और सदैव सत्य के मार्ग पर चलते थे। शिक्षक अपने विद्यार्थियों को उनके व्यक्तित्व और हमारे देश में उनके योगदान के बारे में भी शिक्षित करते हैं। शिक्षक युवा विद्यार्थियों के लिए फैंसी ड्रेस प्रतियोगिताएँ आयोजित करते हैं, जहाँ विद्यार्थी उनकी तरह कपड़े पहनते हैं और उनके बारे में जो कुछ भी वे सीखते हैं, उसे मंच पर प्रस्तुत किया जाता है।

शिक्षकों के अनुसार, छोटे बच्चे व्याख्यान की तुलना में प्रदर्शन के माध्यम से बेहतर सीखते हैं। स्कूल गांधी जयंती मनाते हैं, जहाँ विद्यार्थी महात्मा गांधी की तरह कपड़े पहनते हैं, नाटक तैयार करते हैं, कार्ड बनाते हैं और विभिन्न अन्य गतिविधियों में भाग लेते हैं। स्कूल में पढ़ाई जाने वाली महात्मा गांधी की कहानियाँ और संबंधित कविताएँ विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे उन्हें हमारे देश की शिक्षा में उनके योगदान के बारे में जानने में मदद करती हैं। यह युवा विद्यार्थियों को अपने लक्ष्यों के लिए कड़ी मेहनत करने की शिक्षा देते हुए सही आदर्श चुनने और देश के लिए योगदान देने के लिए प्रेरित कर सकता है।

हालाँकि, कुछ शिक्षकों का मानना है कि प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थी स्वतंत्रता सेनानियों की अवधारणा और उनके योगदान को समझने के लिए बहुत छोटे हैं, जबकि विद्यार्थी क्रिकेटरों और अभिनेताओं के बारे में जल्दी सीखते हैं, उनके लिए महात्मा गांधी जैसी शख्सियतों के महत्व को समझना मुश्किल होता है। इससे निपटने के लिए, शिक्षकों को कक्षा में पढ़ाए गए अध्यायों के साथ-साथ कई गतिविधियाँ और प्रस्तुतियाँ आयोजित करनी चाहिए, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि सभी विद्यार्थी उस विषय को समझते हैं, जो उन्हें पढ़ाया जाता है। शिक्षक, लिखित और मौखिक परीक्षणों और असाइनमेंट के माध्यम से विद्यार्थियों की समझ का भी आकलन करते हैं।

कुछ शिक्षकों का प्रस्ताव है कि ईमानदारी जैसे केवल एक विषय पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय महात्मा गांधी के आंदोलनों पर पाठ को प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को उनके जीवन और संदेश को बेहतर ढंग से समझने में मदद करने के लिए उनकी तस्वीरों वाले प्रोजेक्टर का उपयोग करके अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने के भी सुझाव हैं।

अध्ययन के संक्षिप्त आकलन

पाठ्यपुस्तक सामग्री विश्लेषण से, हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि महात्मा गांधी के बारे में कहानियाँ केवल एक ऐतिहासिक व्यक्ति की कहानियाँ नहीं हैं; वे गहन नैतिक शिक्षा लेकर चलते हैं जिसकी गूँज आज भी सुनाई देती है। सी.बी.एस.ई. और गुजरात राज्य बोर्ड के प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के लिए, ये कहानियाँ सत्य, अहिंसा और करुणा के गुणों की खिड़की के रूप में काम करती हैं, जिनका उदाहरण महात्मा गांधी ने दिया था। सरल लेकिन प्रभावशाली

कथाओं के माध्यम से, बच्चे शांतिपूर्ण प्रतिरोध की शक्ति, जो सही है उसके लिए खड़े होने के महत्व और विविधता को अपनाने की सुंदरता के बारे में सीखते हैं। ये कहानियाँ युवा मन को सहानुभूति, सहिष्णुता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना पैदा करने के लिए प्रेरित करती हैं, जो एक बेहतर दुनिया बनाने के लिए प्रतिबद्ध भावी पीढ़ी की नींव रखती हैं।

सी.बी.एस.ई. और गुजरात राज्य बोर्ड के शिक्षकों के साथ परामर्श करते हुए, मैंने महात्मा गांधी पर उनके दृष्टिकोण जानने की कोशिश की। मुझे उनके संबंध में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के विचारों में विशेष रुचि दिखी। मैंने शिक्षकों के साथ ऑनलाइन साक्षात्कार आयोजित किए और उनसे कुछ प्रश्न पूछे। शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने के बाद, यह स्पष्ट था कि वे महात्मा गांधी को एक बेहद सकारात्मक और प्रेरणादायक स्वतंत्रता सेनानी मानते थे। उनका मानना है कि विद्यार्थियों को उनके जीवन के बारे में पढ़ाना और उनके नैतिक और चारित्रिक विकास को बढ़ावा देने के लिए एक शिक्षण महत्वपूर्ण है। शिक्षकों ने इस बात पर भी बल दिया कि संबंधित मानकों के अनुसार महात्मा गांधी से संबंधित विषय प्रासंगिक और आवश्यक हैं।

निष्कर्ष

प्राथमिक स्तर पर महात्मा गांधी का प्रक्षेपण बच्चे के समग्र नैतिक, आध्यात्मिक और चारित्रिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में अवधारणा को हर पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए, चाहे वह आई.सी.एस.ई/ सी.बी.एस.ई. हो, या कोई राज्य बोर्ड हो। यहाँ तक कि राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में भी प्राथमिक स्तर पर हमारे राष्ट्रीय नायकों की अवधारणा को शामिल करने का उल्लेख किया गया है। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, महात्मा गांधी को प्राथमिक विद्यालय के पाठों के स्तर पर पेश किया जाना चाहिए। उस चरण में, उन्हें महात्मा गांधी की सीख से अहिंसा, सत्य और ईमानदारी, क्षमा, दृढ़ता तथा सावधानी की भावना भी विरासत में मिलनी चाहिए। इसलिए, बच्चों को प्राथमिक विद्यालय और माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा में हमारे उत्कृष्ट और दयालु मानव नेताओं और उनके समय के बारे में सिखाया जाना चाहिए। उनसे संबंधित शिक्षाओं ने समाज को सीधे प्रभावित किया है (ठाकुर, 2020)। बच्चों को अपने देश के प्रति लगाव और जुड़ाव की भावना को समझने में मदद करने के लिए स्कूलों को हमारे राष्ट्रीय नायकों पर प्रश्नोत्तरी जैसी प्रतियोगिताओं की मेजबानी करने और राष्ट्रीय स्वतंत्रता सेनानियों के दिनों या गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गांधी जयंती जैसी छुट्टियों को मनाने की पहल जारी रखनी चाहिए (सी.बी.एस.ई., 2019)। इसके अलावा, यह माना जाता है कि कक्षा व्याख्यान के दौरान विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करना लंबे समय में सहायक नहीं होगा। इसके बजाय, विद्यार्थियों को व्यस्त रखने के लिए व्याख्यान पद्धति व्यावहारिक, ईमानदार और कहानी-आधारित होनी चाहिए (अहमद, 2021)। इसके अलावा, शिक्षकों को चल रहे विषय के संबंध में विद्यार्थियों के अनुभव और विचार पूछने चाहिए, क्योंकि सामग्री को बेहतर ढंग से समझने के लिए उनकी भागीदारी महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के परिप्रेक्ष्य में

यह स्वीकार किया गया है कि व्यक्तित्व निर्माण का दायित्व शिक्षकों पर ही है। कक्षा में विद्यार्थियों को शामिल करने से एक इंटरैक्टिव और रोमांचक सीखने का माहौल बन सकता है। इस दृष्टिकोण को अपनाने वाले शिक्षक विद्यार्थियों को किसी भी विषय को प्रभावी ढंग से समझने में मदद कर सकते हैं।

संदर्भ

अहमद, एस. 2021. रीडिंग महात्मा गांधी इन टुडेज टेक्स्ट. *इन डिस्कवरिंग एजुकेशन एंड सोसाइटी— ए गांधियन प्रोस्पेक्टिव* (संपादक) पंकज दास और अनीता वैद्यनाथन. शिप्रा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली.

गांधी, एम.के. 1976. *सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी*. नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद.

गुजरात स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल टेक्स्टबुक. 2015. *इंग्लिश टेक्स्टबुक फॉर क्लास IV*. गांधीनगर.

ठाकुर, ए. 2020. द रिसेंबलेंस ऑफ गांधी जी 'नई तालीम' इन एन. ई.पी. 2020. इज एनमिसिबल. द *क्वींट*. https://www.thequint.com/news/education/resemblance-of-mahatama-gandhis-nai-talim-in-nep-2020

पाठक, ए. 2009. *रिकॉलिंग द फॉरगॉटेन एजुकेशन एंड मोरल क्वेस्ट*. आकर बुक्स, नई दिल्ली.

प्रधान, आर.सी. 2016. मेकिंग सेंस ऑफ गांधीज आइडिया ऑफ ट्रुथ. *सोशल साइंटिस्ट*. 34 (5/6), पृ.सं. 36–49.

मिलान, ए.के. 2020. *एजुकेशन फिलॉसफी ऑफ महात्मा गांधी*. https://www.scribd.com/document/531355636/C-8-EDUCATIONAL-PHILOSOPHY-OF-MAHATMA-GANDHI-A-K-Milan

रा.शै.अ.प्र.प. 2007. *रिमझिम* (चौथी कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

सी.बी.एस.ई. 2019. *एक्सप्रेशन सीरीज ऑन महात्मा गांधी*. http://cbseacademic.nic.in/web_material/Circulars/2019/37_Circular_2019.pdf